ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in July 2025

# "कबीर के कृतित्व का साहित्यिक एवं दार्शनिक अध्ययन"

विष्णु कुमार शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
डॉ. सुरेश कड़वासरा, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ

## सारांश

कबीर मध्यकालीन हिन्दी भक्ति साहित्य के ऐसे संत–कवि हैं जिनका कृतित्व साहित्यिक, सामाजिक और दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके काव्य में भक्ति, आध्यात्मिकता, सामाजिक चेतना और मानवतावादी दृष्टिकोण का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कबीर का कृतित्व मुख्यतः मौखिक परंपरा में विकसित हुआ, जिसे बाद में उनके शिष्यों और अनुयायियों ने विभिन्न संकलनों में संचित किया। उनकी रचनाएँ प्रमुख रूप से साखी, सबद, दोहा और रमैनी के रूप में प्राप्त होती हैं, जिनका प्रमुख संग्रह बीजक तथा कबीर ग्रंथावली में मिलता है।

कबीर के कृतित्व की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी स्पष्टता, सरलता और जनसामान्य से जुड़ी हुई अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त धार्मिक पाखंड, कर्मकांड, अंधविश्वास तथा जातिगत भेदभाव का तीखा विरोध किया। कबीर ने यह प्रतिपादित किया कि सच्ची भक्ति बाहरी आडंबरों में नहीं बल्कि आत्मज्ञान और अंतःकरण की पवित्रता में निहित है। इसी कारण उनके साहित्य में निर्गुण भक्ति का स्वर प्रमुख रूप से दिखाई देता है, जिसमें ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान माना गया है।

साहित्यिक दृष्टि से कबीर का काव्य अत्यंत प्रभावशाली और मौलिक है। उनकी भाषा सरल, लोकप्रचलित तथा सधुक्कड़ी रूप में विकसित हुई है, जिससे उनकी वाणी सीधे जनमानस तक पहुँचती है। कबीर ने अपने काव्य में प्रतीक, रूपक और व्यंग्य का प्रभावी प्रयोग किया है, जिसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक और धार्मिक विसंगतियों पर प्रहार किया। उनके दोहे और साखियाँ जीवन के गहरे अनुभवों और आध्यात्मिक अनुभूतियों का सार प्रस्तुत करते हैं।

दार्शनिक दृष्टि से कबीर का कृतित्व अद्वैतवादी और अनुभवप्रधान दर्शन पर आधारित है। उन्होंने गुरु, नाम–स्मरण और आत्मज्ञान को आध्यात्मिक मुक्ति का मुख्य साधन माना है। उनके विचारों में हिंदू और इस्लामी दोनों धार्मिक परंपराओं का समन्वय दिखाई देता है, जिससे उनका दर्शन सार्वभौमिक और मानवतावादी स्वरूप ग्रहण करता है।

इस प्रकार कबीर का कृतित्व केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वह सामाजिक सुधार, धार्मिक समन्वय और आध्यात्मिक जागरण का भी सशक्त माध्यम है। आज के समय में भी कबीर की वाणी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है और मानव समाज को सत्य, प्रेम तथा समानता का संदेश प्रदान करती है।

**शोध कुंजीः कबीर, कबीर कृतित्व, संत साहित्य, निर्गुण भक्ति, भक्ति आंदोलन, कबीर दर्शन, साखी, सबद, रमैनी, बीजक, कबीर ग्रंथावली, मानवतावाद, सामाजिक चेतना, आध्यात्मिकता, सधुक्कड़ी भाषा इत्यादि।**

## शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध–पत्र में कबीर के कृतित्व का साहित्यिक एवं दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन करने के लिए मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य कबीर की रचनाओं के स्वरूप, उनकी भाषा–शैली तथा उनमें निहित दार्शनिक विचारों को व्यवस्थित रूप से समझना है। इसके लिए कबीर की प्रमुख कृतियों और उनसे संबंधित साहित्यिक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से संपन्न करने के लिए निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया गया है–

विषय का चयन और सीमांकन : सबसे पहले शोध के लिए "कबीर के कृतित्व का साहित्यिक एवं दार्शनिक अध्ययन" विषय का चयन किया गया। इसके अंतर्गत अध्ययन को विशेष रूप से कबीर की रचनाओं और उनमें निहित साहित्यिक तथा दार्शनिक तत्वों तक सीमित रखा गया है, ताकि विषय का व्यवस्थित और गहन विश्लेषण किया जा सके।

स्रोत सामग्री का संग्रह : अध्ययन के लिए कबीर की प्रमुख कृतियों जैसे बीजक, साखी, सबद और रमैनी का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त कबीर साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध–पत्रों तथा साहित्यिक संदर्भ पुस्तकों का भी उपयोग किया गया, जिससे विषय की प्रामाणिकता और व्यापकता सुनिश्चित हो सके।

साहित्यिक पक्ष का विश्लेषण : इस सोपान में कबीर के काव्य के साहित्यिक स्वरूप का अध्ययन किया

गया है। इसके अंतर्गत उनकी भाषा, शैली, काव्य रूप, प्रतीकों तथा अभिव्यक्ति की विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी देखा गया है कि कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से किस प्रकार सरल और प्रभावशाली भाषा में गहन विचारों को व्यक्त किया।

दार्शनिक विचारों का अध्ययन : इस चरण में कबीर के कृतित्व में निहित दार्शनिक तत्वों का अध्ययन किया गया है। इसमें विशेष रूप से उनके निर्गुण भक्ति सिद्धांत, आत्मज्ञान, गुरु–महिमा, नाम–स्मरण तथा ईश्वर की निराकार अवधारणा का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि कबीर का दर्शन किस प्रकार सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना को प्रकट करता है।

निष्कर्ष का प्रतिपादन : कबीर का कृतित्व साहित्यिक सौंदर्य और गहन दार्शनिक दृष्टि का अद्वितीय समन्वय है। उनकी रचनाएँ न केवल भक्ति साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं, बल्कि वे सामाजिक सुधार और मानवता के संदेश को भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

**शोध का महत्व**

कबीर का कृतित्व हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका साहित्य केवल भक्ति भावना की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि उसमें गहन सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक विचार भी समाहित हैं। कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से उस समय के समाज में व्याप्त अंधविश्वास, धार्मिक पाखंड, कर्मकांड और जातिगत भेदभाव का विरोध किया तथा मानवता, समानता और सत्य के मार्ग का प्रतिपादन किया। इस प्रकार उनका कृतित्व सामाजिक चेतना और सुधार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

साहित्यिक दृष्टि से कबीर का कृतित्व अत्यंत प्रभावशाली और मौलिक है। उन्होंने अपने विचारों को दोहा, साखी, सबद और रमैनी जैसे काव्य रूपों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी भाषा सरल, लोकप्रचलित और सधुक्कड़ी रूप में विकसित हुई है, जिससे उनका साहित्य जनसामान्य तक सहज रूप से पहुँच सका। कबीर की अभिव्यक्ति में प्रतीक, रूपक और व्यंग्य का प्रभावी प्रयोग मिलता है, जो उनके काव्य को अधिक प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार साहित्यिक दृष्टि से उनका कृतित्व हिंदी भक्ति साहित्य की एक महत्वपूर्ण धरोहर है।

दार्शनिक दृष्टि से भी कबीर का कृतित्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने निर्गुण भक्ति की अवधारणा को प्रमुखता दी, जिसमें ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान माना गया है। कबीर ने यह स्पष्ट किया कि सच्ची भक्ति बाहरी आडंबरों और कर्मकांडों में नहीं बल्कि आत्मज्ञान, गुरु की महिमा और आंतरिक साधना में निहित है। उनके विचारों में अद्वैतवादी दृष्टिकोण तथा अनुभव–आधारित आध्यात्मिकता का समन्वय देखने को मिलता है।

इसके अतिरिक्त कबीर के कृतित्व में धार्मिक समन्वय की भावना भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों की रूढ़ियों की आलोचना करते हुए मानवता और एकेश्वरवाद का संदेश दिया। इस प्रकार उनका कृतित्व विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास करता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो कबीर का कृतित्व हिंदी साहित्य, भारतीय दर्शन और सामाजिक चेतना तीनों ही क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। उनकी वाणी आज भी समाज को सत्य, प्रेम, समानता और आध्यात्मिकता का संदेश देती है, जिससे उनकी रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक प्रतीत होती हैं जितनी उनके समय में थीं।

**शोध के उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य कबीर के कृतित्व का साहित्यिक एवं दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कबीर की रचनाओं में निहित विचार किस प्रकार साहित्यिक अभिव्यक्ति और दार्शनिक चिंतन का समन्वय प्रस्तुत करते हैं।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- कबीर के कृतित्व की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- कबीर की रचनाओं के साहित्यिक स्वरूप, भाषा और शैली का विश्लेषण करना।
- कबीर के काव्य में निहित दार्शनिक विचारों और निर्गुण भक्ति सिद्धांत को स्पष्ट करना।
- कबीर के कृतित्व में व्यक्त सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना को समझना।
- हिंदी भक्ति साहित्य में कबीर के योगदान और उनके कृतित्व की महत्ता को स्पष्ट करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कबीर का कृतित्व केवल

साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज, संस्कृति और दर्शन पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

**शोध का निष्कर्ष**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कबीर का कृतित्व हिंदी भक्ति साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली धरोहर है। उनके काव्य में साहित्यिक सौंदर्य, सामाजिक चेतना और गहन दार्शनिक विचारों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कबीर ने अपने दोहों, साखियों, सबदों और रमैनी के माध्यम से समाज को सत्य, प्रेम और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। उनका कृतित्व केवल धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध एक सशक्त स्वर के रूप में भी सामने आता है।

साहित्यिक दृष्टि से कबीर का काव्य अत्यंत प्रभावशाली, सरल और जनसामान्य से जुड़ा हुआ है। उन्होंने सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को अत्यंत सहज और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया, जिससे उनकी वाणी सीधे जनमानस तक पहुँची। उनके काव्य में प्रतीकों, रूपकों और व्यंग्य का प्रभावी प्रयोग मिलता है, जो उनकी अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाता है। इस प्रकार कबीर का कृतित्व हिंदी साहित्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

दार्शनिक दृष्टि से भी कबीर का कृतित्व अत्यंत गहन और व्यापक है। उन्होंने निर्गुण भक्ति की अवधारणा को प्रमुखता देते हुए ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान माना। कबीर ने यह प्रतिपादित किया कि सच्ची भक्ति बाहरी कर्मकांडों या आडंबरों में नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, गुरु की महिमा और आंतरिक साधना में निहित है। उनके विचारों में अद्वैतवादी दृष्टिकोण तथा अनुभव–आधारित आध्यात्मिकता का समन्वय दिखाई देता है।

इसके अतिरिक्त कबीर के कृतित्व में धार्मिक समन्वय और मानवतावादी दृष्टिकोण भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों की रूढ़ियों की आलोचना करते हुए मानवता, समानता और प्रेम का संदेश दिया। इस प्रकार उनका कृतित्व सामाजिक सद्भाव और नैतिक मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर का कृतित्व केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक गहन जीवन–दर्शन और सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम है। उनकी रचनाएँ आज भी मानव समाज को सत्य, प्रेम, समानता और आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करती हैं, जिससे उनकी वाणी की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. डॉ. रामकुमार वर्मा (1956) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
2. प्रो. हरिशंकर परसाई (संदर्भात्मक उद्धरण)(1980) निबंध संग्रह
3. प्रो. नामवर सिंह(1997) 'कबीर के सामाजिक संदर्भ'
4. डॉ. नामवर सिंह (2002) कविता के नये प्रतिमान
5. प्रो. राजेन्द्र प्रसाद (2005) 'कबीर की समसामयिकता'
6. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी (2005) कबीरः
7. डॉ. सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (2008) 'कबीर और शिक्षा दर्शन'
8. डॉ. सत्यव्रत समशेर (2010) 'कबीरः दर्शन और शिक्षा'
9. डॉ. रेखा सिंह (2011) कबीर का शिक्षामूलक दृष्टिकोण
10. डॉ. ओमप्रकाश द्विवेदी (2012) 'कबीरः साहित्य और समाज'
11. डॉ. नवीन चंद्र पांडेय (2014) लोकशिक्षा में संत साहित्य की भूमिका
12. कबीर– हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्रा०लि०), बम्बई, 4, 1947
13. कबीर – एक विवेचन– डा० सरनाम सिंह शर्मा, प्र० हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली।
14. कबीर और कबीर पंथ डा० केदार नाथ द्विवेदी, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965
15. कबीर की भक्ति भावना विलियम द्वायर– प्र० मैकमिलन, दिल्ली वि०सं० 1976
16. कबीर की विचारधारा– डा०गोविन्द त्रिगुणायत, प्र० साहित्य निकेतन, कानपुर, 1981